समकालीन हिन्दी साहित्य

विविध विमर्श

संपादक : डॉ. महानंदा बी. पाटील
सह संपादक : डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील

समकालीन हिन्दी साहित्य
विविध विमर्श

संपादक

डॉ. महानंदा पाटील

सह संपादक

डॉ. मीनाक्षी पाटील

आर. के. पब्लिकेशन

मुम्बई

ISBN : 978-93-91458-66-9

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 300/-

शीर्षक

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

संपादक

डॉ. महानंदा पाटील

सह संपादक

डॉ. मीनाक्षी पाटील

प्रकाशक

आर.के. पब्लिकेशन

1/12, पारस दूबे सोसायटी,
ओवरी पाढ़ा, एस.वी.रोड,
दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068

Phone : 9022521190 / 9821251190
E-mail : publicationrk@gmail.com
Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र
virar.mishra63@gmail.com

आवरण : सुनील निंबरे

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

Samkaaleen Hindi Sahitya : Vividh Vimarsh Edited By
Dr. Mahananda Patil & Dr. Meenaxi Patil

अनुक्रमणिका

1. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी का विकास
   प्रो. बी.के. प्रजापति 11

2. बीसवीं सदी के विविध विधाओं में संस्मरण विधा का स्थान
   डॉ. एम. बी. जमादार 20

3. आधुनिक हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श
   प्रो. रूपा भीमराव पाटील 26

4. उपन्यास विधाओं के संदर्भ में स्त्री विमर्श
   डॉ. महानंदा पाटील 29

5. स्त्री- विमर्श
   डॉ. सुमी चोपड़े 35

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में भाषाओं का महत्व
   डॉ. अशोक वी. सूर्यवंशी 39

7. हिन्दी के कुछ चुने हुए उपन्यासों में दलित विमर्श
   डॉ. अञ्जलि. एन 42

8. कुवेंपु की कविताओं में राष्ट्रीयता की भावना
   डॉ.राजशेखर उमेश जाधव 50

9. स्त्री चित्रण का दस्तावेज : निर्मला
   डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील 56

स्त्री-विमर्श

- डॉ. सुमी चोपड़े

मानव समाज का इतिहास स्त्री को प्रभुत्व एवं शक्ति से दूर रखने का इतिहास है। विश्व के प्रायः सभी देशों, सभी जातियों तथा सभी धर्मों ने स्त्री को पुरुषों के बराबर न आने देने की मर्यादाएँ निर्मित की हैं।

स्त्री-विमर्श का अर्थ ही यह है कि, पुरुष प्रधान समाज तथा परंपरागत रीति-रिवाज तथा आडंबर से भरे दृष्टिकोण की व्याख्या करना, इसके साथ-साथ स्त्री को सभी दृष्टिकोणों से सशक्त करने का संकल्प है।

दुनिया की प्रायः सभी नारियों ने इसे सहर्ष अपनाया तथा पुरुषों की भाँति समाज में आजादी की खुल कर माँग की है। वर्तमान में ईरान की स्त्रियों ने अपनी आजादी की माँग की आवाज उठाई हैं, वे भी परदा उठाकर आजादी से जीवन जीने का हक माँग रही हैं, तमाम पहलुओं को देखने के बाद यही दिखाई देता है कि स्त्री को जो अधिकार प्राप्त हैं उनसे वे आज भी बहुत दूर हैं, अपने मूलभूत अधिकारों को प्राप्त करने के लिए वह देवी स्वरूप, लक्ष्मी स्वरूप, सरस्वती स्वरूप नारी आज भी संघर्ष कर रही है। यही स्त्री का संघर्ष ही स्त्री विमर्श है।

प्राचीनकाल में स्त्री को अर्धांगिनी, पत्नी, राजमाता, माता के रूप में निर्णय लेने का अधिकार था किन्तु उत्तर वैदिक काल में पुरुष वर्ग ने स्त्रियों के अधिकारों को नियंत्रित करने के लिए अनेक नियम कानून बनाकर स्त्रियों को केवल भोग्य की वस्तु बना दिया है। सती प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह के द्वारा स्त्रियों के अस्तित्व का पतन ही कर दिया है।

इक्कीसवीं सदी में भी जहाँ 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा एक ओर बुलंद किया जा रहा है तो दूसरी ओर स्त्री का हर क्षेत्र में शोषण किया जा रहा है, उसे निम्न स्तर का दर्जा दिया जा रहा है, किसी भी क्षेत्र में नारी सुरक्षित नहीं है। नवीन वर्ष का आरंभ किसी न

किसी निर्भया के ऊपर अत्याचार के साथ ही शुरू होता है।

संसार की गतिविधियों को चलाने के लिए विधाता ने स्त्री-पुरुष इन दो जातियों का निर्माण किया था, दोनों को बराबरी का हक भी उस निर्माता ने ही दिया है। संसार तथा गृहस्थी रूपी रथ को चलाने हेतु दो पहिए तथा चाक अपेक्षित है, किन्तु दास, स्वामी, जेष्ठ, कनिष्ठ की राजनीति ने स्त्री का मूल्य हमेशा के लिए निम्न कर दिया है। कभी भी स्त्री को पुरुष प्रधान समाज के दल ने दिल से प्रोत्साहन नहीं दिया, समाज ने स्त्री की सराहना की तो भी देवियों का नाम लेकर, लेकिन वह भी खोखली। सुबह पैसे देने पर लक्ष्मी शाम होते-होते वही लक्ष्मी कुलक्षणी हो गयी, आदर्श नारी की उपमा देकर उसका शोषण किया, निगरानी में रखा, प्यार के नाम पर हर रिश्तों ने पहरा बिठाया, संस्कार, विवाह, धर्म आदि के नाम पर जन्म से लेकर बुढ़ापे तक नियंत्रण में रखा।

समय का पहिया घूम रहा है, वर्तमान का समय स्त्री का है, बहुत सह लिया, दबी रही, अब वह सारे बंधनों से मुक्त होना चाह रही है, अब स्त्री ने आवाज उठायी है, मानसिकता बदल चुकी है, स्त्री को गहने नहीं विश्वास चाहिए, पैसे नहीं आजादी चाहिए, झूठी तारीफ नहीं सम्मान चाहिए।

इतिहास के पन्नों में देखें तो पुराणों में भी इसके प्रमाण मिलते हैं, स्त्री जो एक बार ठान लेती है, तो दानव क्या देव भी चकित हो जाते हैं, महाभारत की गांधारी जिसने अपने देश गंधार को बचाने के लिये जन्मांध धृतराष्ट्र से विवाह कर अपना राज्य तथा निरपराध लोगों को बचा लिया। सावित्री बाई फुले का संघर्ष वरदान साबित हुआ। स्त्रियों को साक्षर बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

समाज को एक नया रूप देने के लिए महिला उपन्यासकारों का योगदान मील का पत्थर साबित हुआ। महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से लेखन में अपनी लेखकीय पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की। इन उपन्यासकारों ने अपनी रचना में बड़ी प्रखरता

एवं सुदृढ़ता के साथ स्त्री की अलग अस्मिता, स्त्री की पहचान, स्त्री की शक्ति, स्त्री की लड़ाई और स्त्री से जुड़े तमाम सवालों को स्थान दिया है।

बीसवीं शताब्दी का सातवाँ-आठवाँ दशक महिला रचनाधर्मिता के विस्फोट के रूप में जाना जाता है। इस दौर में स्त्री कथाकारों ने जिन शक्तिशाली उपन्यासों की रचना की, उनमें से बहुतों को यदि कालजयी कहा जाय तो असंगत न होगा। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, कुसुम अंसल, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा आदि के उपन्यासों को सार्थक पहचान मिली है। इन स्त्रियों के उपन्यासों में एक ओर मानव के अचेतन मन की परतों को खोलने की चेष्टा की गयी है तथा स्त्रियों के गूढ़ मनोवैज्ञानिक गुत्थियों को सुलझाने का प्रयत्न किया गया है। आधुनिक स्त्री उपन्यासकारों की रचनाओं की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि इन उपन्यासकारों में नारी समस्या का गहन विश्लेषण करके उनके कारण तथा समाधान को प्रस्तुत किया है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है। इस प्रकार इन उपन्यासकारों ने स्त्री विमर्श को नये ढंग से आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। इसमें स्त्रियों का नया अनुभव, उनका संसार, उनकी चिंताएँ, उनका दुःख, उनकी अभिलाषाएँ, उनका स्वप्न, एकांत एवं दैहिक प्रश्नों का प्रखर ढंग से नये तेवर के साथ प्रस्तुतीकरण हुआ है। सामाजिक एवं नैतिक वर्जनाओं, दोहरे मापदंडों पर विचार किया गया है।

अंततः आधुनिक विचार प्रणाली वाली महिलाएँ अपने आप में सक्षम हैं। उनके कंगन से खनकते हाथों में शासन को संभालने का सामर्थ्य हैं। पायल की झँकार वाले पैर अब प्रगति रूपी घोड़े पर उछलने लगे हैं, रूप तथा शृंगार को अपना धन माननेवाली स्त्री युद्ध क्षेत्र में लगे घावों को अपना आभूषण मानने लगी हैं। जितनी भी कोमल भावनाएँ हैं वे स्त्रित्व से जुड़ी हैं। जब भगवान स्त्री के बिना शून्य हैं तब समाज संरचना कैसे संभव है।

"यत्रनार्यस्तुपूज्यन्ते, रमन्तेतत्र देवताः।
यत्रोतास्तुन न पूज्यन्तेसर्वस्तत्रा फलः।"

स्त्री का सम्मान जहाँ है, वहाँ देवताओं का वास स्थान है। जहाँ स्त्री का अनादर है वहाँ सर्व कार्यों में विघ्न है। क्षमा शर्मा अत्यंत सहज शब्दों में अपनी पुस्तक 'स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य की भूमिका' में लिखती हैं कि "स्त्रीवाद विमर्श न मजाक का विषय है, ना अपवाद का। वह एक ही समय हमारे देशकाल और पूरी दुनिया से जुड़ा है। यह आज समय की जरूरत है यह आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, भाषिक और सांस्कृतिक विमर्श है।"

इस प्रकार स्त्रियों की वेदना ही नारी मुक्ति की जन्मदात्री है। यह वेदना पूरे समाज की स्त्रियों की वेदना है। जरूरत है समाज को बदलने की जो स्त्रियों की इस वेदना को समझ सके। स्त्री अपने मुक्ति की बात पहले भी करती थी, पर उसे कभी भी गंभीरता से नहीं लिया गया फिर भी स्त्री गर्व से यही कहती है-

"मैं तुम्हारे पैमानों पर फिट नहीं,
फिर भी मैं सुन्दर हूँ।
मौन हूँ, नि:शब्द नहीं।
आवाज है बस बोलती नहीं।
जज्बात है, मुँह खोलती नहीं।
चाहत है, पर उम्मीद नहीं।
पहल ना करूँ, किसी से डरती नहीं।
जीत की परवाह नहीं, हार मानती नहीं।
आईना हूँ, बिखरती नहीं।
दर्द से भरी हूँ, जीना छोड़ती नहीं।"

सहायक प्राध्यापिका
एस. बी. कला एवं के. सी. पी. विज्ञान महाविद्यालय
विजयपुर

❖❀❖